वर्ष 6, अंक 63, जुलाई 2020

Peer Reviewed Journal

ISSN 2454-2725

Impact Factor: 1.888 [GIF]

बहु-विषयी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

जनकृति

जुलाई 2020

अंक 63

JANKRITI

Multidiciplinary International Monthly Magazine

संपादक

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

Editor

Dr. Kumar Gaurav Mishra

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
	किन्नर-विमर्श/ Third Gender Discourse		
17.	किन्नर जीवन : एक दर्द भरा दास्तान	पूजा सचिन धारगलकर	133-140
18.	संघर्ष की दास्तान वाया थर्ड जेन्डर	डॉ. आलोक कुमार सिंह	141-144
	इतिहास/ History		
19.	ग्वालियर के तोमर शासनकालीन ऐतिहासिक महल	डॉ. आनन्द कुमार शर्मा	145-148
	वाणिज्य/ Commerce		
20.	Comparative Study of HDFC Bank and SBI	Mr. Anilkumar Nirmal Dr. Purvi Derashri	149-162
	साहित्यिक-विमर्श/ Literature Discourse		
21.	नव वैश्विक युवाओं की संघर्ष गाथा 'डार्क हार्स'	धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	163-167
22.	डॉ. रामविलास शर्मा के पत्रों में विविध सामाजिक पक्ष	राहुल श्रीवास्तव	168-174
23.	प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में चित्रित पत्रकारिता संदर्भ	डा. पवनेश ठकुराठी	175-181
24.	पहाड़िया साम्राज्य के आदि विद्रोह एवं बलिदान की समरगाथा: हुल पहाड़िया उपन्यास	विकास पराशर	182-186
25.	मानस की भाषिक पूर्वपीठिका के रूप में संस्कृत का अवदान: एक संक्षिप्त विवेचन	डॉ. के. आर महिया	187-191
26.	खोरदेकपा परंपरा की जटिलताएं और 'सोनम' उपन्यास	डॉक्टर स्नेह लता नेगी	192-197
27.	वैश्विक महामारी कोरोना के संदर्भ में: साहित्य की भूमिका	सारिका ठाकुर	198-202
	साहित्यिक रचनाएँ		
28.	कविता	पुरूषोत्तम व्यास, कवि (डॉ.) शैलेश शुक्ला, पंडित विनय कुमार, पंकज मिश्र 'अटल'	203-208
29.	कहानी	डॉ.वर्षा कुमारी	209-211
30.	लघुकथा	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	212
31.	व्यंग्य	नरेन्द्र कुमार कुलमित्र दिलीप तेतरवे	213-217
32.	गज़ल	अनुज पांडेय	218
33.	संस्मरण	उर्मिला शर्मा	219-220
34.	यात्रा वृत्तांत	संतोष बंसल	221-227
	लोकसाहित्य एवं संस्कृति		
35.	भारतीय लोक साहित्य में पर्यावरण	विकास कुमार गुप्ता	228-230

नव वैश्विक युवाओं की संघर्ष गाथा 'डार्क हार्स'

धर्मेन्द्र प्रताप सिंह
कक्ष संख्या-214, सिंधु ब्लॉक
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय
dpsingh777@gmail.com

शोध सारांश :

नीलोत्पल मृणाल का यह उपन्यास आज के युवाओं की अंतरगाथा है। पारिवारिक और सामाजिक दबाव में युवा किस तरह जकड़ा है, यह उपन्यास में बखूबी स्पष्ट किया गया है। आज वैश्वीकरण के युग में आने वाली पीढ़ी की जरूरतें रोटी, कपड़ा और मकान तक सीमित न रहकर एक एलीट वर्ग की जीवन शैली अपना रही है जिसे उपन्यास में दिखाया गया है। एक नौकरी की आकांक्षा में आज का युवा अपने परिवार सहित सर्वस्व कुर्बान करने के लिए तत्पर है। इन्हीं समस्याओं को विवेच्य उपन्यास स्वर प्रदान करता है।

की-वर्ड :

किस्सागोई, ग्लोबलाइजेशल, लोकलाइजेशन, अजनिबियत, चिरंजीवी, अप्रत्याशित, जोजिला दर्रे।

शोध विस्तार :

'डार्क हार्स' नीलोत्पल मृणाल का लघु उपन्यास है जिसमें आज की प्रतियोगी परीक्षा यू0पी0एस0सी देने वाले संघर्षरत पीढ़ी की जीवंत तस्वीर उकेरी गई है। यह कृति अपने कथ्य में देश के उन 60 फीसदी युवाओं को समेट लेती है जो पढ़ाई पूरी करने के बाद माँ-बाप के सपने आँखों में संजोकर स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने को तैयार हैं। उक्त कृति की महत्ता इससे भी सिद्ध होती है कि इसे साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2016 से सम्मानित किया जा चुका है। इस उपन्यास में रचनाकार ने सिविल परीक्षाओं की तैयारी करने वाले जितने भी सकारात्मक और नकारात्मक चरित्र हो सकते हैं, सभी को अपनी लेखनी द्वारा मूर्त रूप प्रदान कर पाठकों के सम्मुख उपस्थित किया है। कथानायक संतोष, मनोहर, रायसाहब, जावेद, विमलेन्द्र, पायल, विदिशा, मयूराक्षी, श्यामल, इलियास मियां, गोरेलाल यादव, भरत, प्रफुल्ल बटोहिया, गुरूराज सिंह, विरंची पाण्डे, दशरथ बाबू रितुपर्णो महापात्रा, गणपति महापात्रा आदि चरित्रों के माध्यम से कथा को आधार प्रदान किया गया है। कहानी के अंत में संतोष और विमलेन्द्र मनोहर जो कि बिहार का रहने वाला था, सिविल परीक्षाओं में असफलता के बाद मोतीहारी में सीमेंट व्यवसायी के रूप में प्रतिष्ठा पाता है।

उपन्यास के प्रारंभ में ही बिहार कैडर के आई0ए0एस0 मिथिलेश मिश्रा उपन्यास के संदर्भ में अपनी सटीक राय रखते हैं जिससे मैं सौ फीसदी पूरी तरह सहमत हूँ कि- ''डार्क हार्स का कथानक मात्र एक कल्पना न होकर सिविल सेवा की तैयारी कर रहे छात्रों में हर एक की आत्मकथा है, जिसमें तैयारी से जुड़ा हर एक पहलू चाहे कोचिंग हो या अखबार